चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	15.8.24	10	6-8

दैनिक भास्कर

बारिश के मौसम में जलभराव न होने दें, बिजाई के एक माह बाद गुड़ाई करें

ग्वार की अधिक पैदावार लेने के लिए बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट बीमारी का नियंत्रण बहुत आवश्यक

भास्कर न्यूज | हिसार

ग्वार बारानी क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में बोई जाने वाली एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है। ग्वार की फलियों को हरी बीन के रूप में खाया जा सकता है। हरे चारे के रूप मवेशियों को खिलाया जा सकता है या हरी खाद में इस्तेमाल किया जा सकता है। ग्वार दाने में गोंद अधिक होने के कारण इसका औद्योगिक महत्व अधिक है। यह एक वर्षा आधारित फसल है, जिसे जून-जुलाई में बोया जाता है और अक्टूबर-नवंबर में काटा जाता है। समयानुसार यदि ग्वार की फसल में खरपतवार प्रबंधन, सिंचाई, कीडों का नियंत्रण व बीमारियों की रोकथाम की जाए तो फसल का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व चारा अनुभाग के सहायक सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने बताया कि बरसात के दिनों में खेतों में जलभराव न होने दें। खरपतवारों की रोकथाम के लिए एक गुड़ाई बिजाई के एक महीने बाद और आवश्यकता हो तो दूसरी व्हील हैंड से कर देनी चाहिए। ग्वार की समय पर पकने वाली किस्म एचजी 365, एचजी 563, एचजी 2-20, एचजी 870 व एचजी 884 हैं।

बारिश नहीं हो तो फलियां बनते समय हल्की सिंचाई करें

हिसार | ग्वार की फसल पर बैक्टीरियल लीफ का असर।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि आमतौर पर मानसून की वर्षा पर बीजी गई फसल के लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि फलियां बनते समय बिल्कुल वर्षा न हो तो एक हल्की सिंचाई अवश्य करें। कभी-कभी ग्वार की फसल पर तेला कीट का आक्रमण ज्यादा हो जाता है जिसकी रोकथाम करने के लिए 200 मिली मैलाथियान 50 ईसी को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। बिजाई के 50-60 दिन बाद ग्वार की फसल में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट का प्रकोप बढ़ जाता है। इस बीमारी में पत्तों पर भूरे व काले रंग के जलसिक्त धब्बे बनते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	15.4.24	2	4-5

हरी झंडी दिखाकर तिरंगा यात्रा रवाना की

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने तिरंगा यात्रा निकाली। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने हरी झंडी दिखाकर इस यात्रा को रवाना किया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने तिरंगा रैली में उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि रैली को निकालने का मुख्य उद्देश्य लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना और राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूक करना है। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि ये तिरंगा यात्रा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक खंड-फ्लैचर भवन से आरंभ होकर, ओल्ड कैंपस, विश्वविद्यालय के सभी कॉलेजों, प्रवेश द्वारों व आवासीय क्षेत्रों से होकर निकाली गई। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कुलसचिव डॉ. बलवान सिंह मंडल, स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, सम्पदा अधिकारी एवं मुख्य अभियंता डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, वित्त नियंत्रक नवीन जैन, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	15-4-24	2	2-6

हकृवि का दावा, गत वर्ष के मुकाबले गुलाबी सुंडी का प्रकोप कम, सर्वे रिर्पोट से हुआ खुलासा

कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ प्रशिक्षण लेने वाले अधिकारीगण।

हिसार, 14 अगस्त (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा कपास की फसल का फिल्ड में लगातार सर्वे किया जा रहा है। सर्वे के दौरान गुलाबी सुंडी के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए किसानों को प्रशिक्षणों के द्वारा जागरूक भी किया जा रहा है।

कपास विभाग के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. करमल सिंह ने बताया कि हिसार व फतेहाबाद जिलों के विभिन्न गांवों में सर्वे करके उस पर आधारित कपास में गुलाबी सुंडी व अन्य बीमारियों से बचाने के लिए एडवाइजरी भी जारी की गई है। अब तक किए गए सर्वे में यह पाया गया है कि राजस्थान से सटे हुए गांवों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 10 से 35 प्रतिशत तक का असर देखा गया है, वहीं भिवानी व हिसार जिलों में गुलाबी सुंडी का असर 10 प्रतिशत तक है।

कपास अनुभाग व कृषि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गांवों में कृषि मेले भी आयोजित किए गए हैं।

गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष कपास की फसल अच्छी है।

गुलाबी सुंडी से बचाव हेतु करे ये उपाय

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक सभी किसानों को कपास की अधिक पैदावार लेने के लिए आगामी एक महीने तक सजग रहते हुए विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग द्वारा बनाई गई सिफारिश के अनुसार कार्य करने की सलाह दे रहे है। पिछले वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप कम है अगले एक महीने तक किस गुलाबी सुंडी से बचाव के लिए 10 दिन के अंतराल पर निम्नलिखित कीटनाशकों का स्प्रे करें: प्रोपेनोफोस 50 ई.सी.3 मिली लीटर प्रति लीटर पानी, क्विनलफोस 20 ए.एफ. 4 मिली लीटर प्रति लीटर पानी, थायोडिकार्ब 75 डब्ल्यू.पी. 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी। जड़ गलन रोग के लिए प्रभावित पौधों के आस-पास स्वस्थ पौधों में एक मीटर तक कार्बन्डजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 100-200 मिली लीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें। पैराविल्ट के लिए किसान लक्षण दिखाई देते ही 24-48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	15-8-24	8	3

एचएयू की सर्वे रिपोर्ट का दावा

पिछले वर्ष के मुकाबले गुलाबी सुंडी का प्रकोप कम, हिसार में 10 फीसदी नुकसान

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम की ओर से कपास की फसल का फील्ड में सर्वे किया जा रहा है। कपास विभाग के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. करमल सिंह ने बताया कि हिसार व फतेहाबाद जिलों के विभिन्न गांवों में सर्वे करके उस पर आधारित कपास में गुलाबी सुंडी व अन्य बीमारियों से बचाने के लिए एडवाइजरी भी जारी की गई है।

अब तक किए गए सर्वे में यह पाया गया है कि राजस्थान से सटे हुए गांवों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 10 से 35 प्रतिशत तक है। भिवानी व हिसार जिलों में गुलाबी सुंडी का असर 10 प्रतिशत तक है। कपास अनुभाग व कृषि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गांवों में कृषि मेले भी आयोजित किए गए हैं। गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष कपास की फसल अच्छी है और इस बार पहले के मुकाबले कपास की अधिक पैदावार और मुनाफे की संभावना है।

डॉ. करमल सिंह ने बताया कि गत एक माह से कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के एडीओ, बीएओ, एसडीएओ, एटीएम, बीटीएम तथा सुपरवाइजर को हरियाणा एग्रीकल्चरल मैनेजमेंट एंड एक्सटेंशन ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (हमेटी) जींद में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कर्मचारियों/अधिकारियों को विश्वविद्यालय में कपास अनुभाग में कपास के खेतों का भ्रमण भी करवाया जा रहा हैं।

विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग द्वारा बनाई गई सिफारिश के अनुसार कार्य करने की सलाह दी है। पिछले वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप कम है। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	15.8.24	4	1-3

एचएयू की सर्वे रिपोर्ट में खुलासा

इस साल कपास की ज्यादा पैदावार की उम्मीद

हिसार, 14 अगस्त (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम कपास की फसल का लगातार सर्वे कर रही है। सर्वे के दौरान गुलाबी सुंडी के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए किसानों को प्रशिक्षणों द्वारा जागरूक भी किया जा रहा है।

कपास विभाग के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. करमल सिंह ने बताया कि हिसार व फतेहाबाद जिलों के विभिन्न गांवों में सर्वे करके उस पर आधारित कपास में गुलाबी सुंडी व अन्य बीमारियों से बचाने के लिए एडवाइजरी भी जारी की गई है। अब तक किए गए सर्वे में यह पाया गया है कि राजस्थान से सटे हुए गांवों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 10 से 35 प्रतिशत तक का असर देखा गया है, वहीं भिवानी व हिसार जिलों में गुलाबी सुंडी का असर 10 प्रतिशत तक है। कपास अनुभाग व कृषि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गांवों में कृषि मेले भी आयोजित किए गए हैं। गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष कपास की फसल अच्छी है और इस बार पहले के मुकाबले कपास की अधिक पैदावार और मुनाफे की संभावना है।

डॉ. करमल सिंह ने बताया कि गत एक माह से कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के एडीओ, बीएओ, एसडीएओ, एटीएम, बीटीएम तथा सुपरवाइजर को हरियाणा एग्रीकल्चरल मैनेजमेंट एंड एक्सटेंशन ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (हमेटी) जींद में प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कर्मचारियों, अधिकारियों को विश्वविद्यालय में कपास अनुभाग में कपास के खेतों का भ्रमण भी करवाया जा रहा हैं। कपास अनुभाग द्वारा महीने में दो बार कपास की उन्नत खेती करने के लिए एडवाइजरी भी जारी की जाती है।

बीमारी से बचाव के लिए करे ये उपाय

डॉ. करमल सिंह ने बताया कि अगले एक महीने तक किसान गुलाबी सुंडी से बचाव के लिए 10 दिन के अंतराल पर प्रोपेनोफोस 50 ई.सी.3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी, क्विनलफोस 20 ए.एफ. 4 मिली लीटर प्रति लीटर पानी, थायोडिकार्ब 75 डब्ल्यू.पी. 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में डालकर का स्प्रे करें। जड़ गलन रोग के लिए प्रभावित पौधों के आस-पास स्वस्थ पौधों में एक मीटर तक कार्बंडजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 100-200 मिली लीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें। पैराविल्ट के लिए किसान लक्षण दिखाई देते ही 24-48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	15.08.2024	---	--

पिछले वर्ष के मुकाबले गुलाबी सुंडी का प्रकोप कम, हकृवि की सर्वे रिर्पोट से हुआ खुलासा

जागरण संवाददाता • हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा कपास की फसल का जिले में सर्वे किया जा रहा है। सर्वे के दौरान गुलाबी सुंडी के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए किसानों को प्रशिक्षणों के द्वारा जागरूक भी किया जा रहा है।

कपास विभाग के प्रमुख वैज्ञानिक डा. करमल सिंह ने बताया कि हिसार व फतेहाबाद जिलों के विभिन्न गांवों में सर्वे करके डाटा पर आधारित कपास में गुलाबी सुंडी व अन्य बीमारियों से बचाने के लिए एडवाइजरी भी जारी की गई है। अब तक किए सर्वे में यह पाया है कि राजस्थान से सटे हुए गांवों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 10 से 35 प्रतिशत तक का असर देखा गया है। वहीं भिवानी व हिसार जिलों में गुलाबी सुंडी का असर 10 प्रतिशत तक है। कपास अनुभाग व कृषि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गांवों में कृषि मेले भी आयोजित किए गए हैं। गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष कपास की फसल अच्छी है और इस बार पहले के मुकाबले कपास की अधिक पैदावार और मुनाफे की संभावना है।

आने वाले एक महीने में गुलाबी सुंडी से बचाव हेतु करे ये उपाय

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक सभी किसानों को कपास की अधिक पैदावार लेने के लिए आगामी एक महीने तक सजग रह कर कार्य करने की सलाह दे रहा है। पिछले वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप कम है अगले एक महीने तक किस गुलाबी सुंडी से बचाव के लिए 10 दिन के अंतराल पर कीटनाशकों का स्प्रे करें। किसान प्रोफेनोफोस 50 ई.सी. 3 मिली लीटर प्रति लीटर पानी, क्विनलफोस 20 ए.एफ. 4 मिली लीटर प्रति लीटर पानी, थायोडिकार्ब 75 डब्ल्यू.पी. 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी का स्प्रे कर सकते है। जड़ गलन रोग के लिए प्रभावित पौधों के आस-पास स्वस्थ पौधों में एक मीटर तक कार्बेन्डाजिम दो ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 100-200 मिली लीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें।

**

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	15.08.2024	---	--

इस बार सफेद सोने की होगी बंपर पैदावार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम की ओर से कपास की फसल का फिल्ड में लगातार सर्वे किया जा रहा है। सर्वे के दौरान गुलाबी सुंडी के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए किसानों को प्रशिक्षणों के द्वारा जागरूक भी किया जा रहा है।

कपास विभाग के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. करमल सिंह ने बुधवार को बताया कि हिसार व फतेहाबाद जिलों के विभिन्न गांवों में सर्वे करके उस पर आधारित कपास में गुलाबी सुंडी व अन्य बीमारियों से बचाने के लिए एडवाइजरी भी जारी की गई है।

अब तक किए गए सर्वे में यह पाया गया है कि राजस्थान से सटे हुए गांवों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 10 से 35 प्रतिशत तक का असर देखा गया है, वहीं भिवानी व हिसार जिलों में गुलाबी सुंडी का असर 10 प्रतिशत तक है।

किसानों को करेंगे जागरूक

विभिन्न गांवों में कृषि मेले भी आयोजित किए गए हैं। गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष कपास की फसल अच्छी है और इस बार पहले के मुकाबले कपास की अधिक पैदावार और मुनाफे की संभावना है। डॉ. करमल सिंह ने बताया कि गत एक माह से कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के एडीओ, बीएओ, एसडीएओ, एटीएम, बीटीएम तथा सुपरवाइजर को हरियाणा एग्रीकल्चरल मैनेजमेंट एंड एक्सटेंशन ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (हमेटी) जींद में प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	14.08.2024	---	--

गत वर्ष के मुकाबले गुलाबी सुंडी का प्रकोप कम, हकृवि की सर्वे रिर्पोट से हुआ खुलासा

पांच बजे ब्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा कपास की फसल का फिल्ड में लगातार सर्वे किया जा रहा है। सर्वे के दौरान गुलाबी सुंडी के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए किसानों को प्रशिक्षणों के द्वारा जागरूक भी किया जा रहा है।

यह जानकारी देते हुए कपास विभाग के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. करमल सिंह ने बताया कि हिसार व फतेहाबाद जिलों के विभिन्न गांवों में सर्वे करके उस पर आधारित कपास में गुलाबी सुंडी व अन्य बीमारियों से बचाने के लिए एडवाइजरी भी जारी की गई है। अब तक किए गए सर्वे में यह पाया गया है कि राजस्थान से सटे हुए गांवों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 10 से 35 प्रतिशत तक का असर देखा गया है, वहीं भिवानी व हिसार जिलों में गुलाबी सुंडी का असर 10 प्रतिशत तक है। कपास अनुभाग व कृषि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गांवों में कृषि मेले भी आयोजित किए गए हैं। गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष कपास की फसल अच्छी है और इस बार पहले के मुकाबले कपास की अधिक पैदावार और मुनाफे की संभावना है। डॉ. करमल सिंह ने बताया कि गत एक माह से कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के एडीओ, बीएओ, एसडीएओ, एटीएम, बीटीएम तथा सुपरवाइजर को हरियाणा एग्रीकल्चरल मैनेजमेंट एंड एक्सटेंशन ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (हमेटी) जींद में प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कर्मचारियों/अधिकारियों को विश्वविद्यालय में कपास अनुभाग में कपास के खेतों का भ्रमण भी करवाया जा रहा हैं। कपास अनुभाग द्वारा महीने में दो बार कपास की उन्नत खेती करने के लिए एडवाइजरी भी जारी की जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	15-8-24	2	4-6

हकृवि में स्वयंसेवकों ने निकाली तिरंगा यात्रा

हिसार, 14 अगस्त (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने तिरंगा यात्रा निकाली। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने हरी झंड़ी दिखाकर इस यात्रा को रवाना किया।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने तिरंगा रैली में उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि रैली को निकालने का मुख्य उद्देश्य लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना और राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूक करना है। तिरंगा हमारे देश की आन-बान-शान का प्रतीक है, जिसके लिए स्वतंत्रता सेनानियों एवं वीर जवानों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। उन्होंने विशेषकर युवाओं से आह्वान किया कि वे तिरंगे के इतिहास को जाने, कि कितनी कुर्बानियों व कठिन प्रयासों के बाद हमें अपना राष्ट्रीय ध्वज लहराने का अवसर मिला है। उन्हें अपने पूर्वजों की कुर्बानियों को याद रखते हुए तिरंगे की गरिमा को बनाए रखना चाहिए। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि ये तिरंगा यात्रा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक खंड-फ्लैचर भवन से आंरभ होकर, ओल्ड कैंपस, विश्वविद्यालय के सभी कॉलेजों, प्रवेश द्वारों व आवासीय क्षेत्रों से होकर निकाली गई।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज तिरंगा रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	15.08.2024	---	--

राष्ट्रीय ध्वज देश की एकता, प्रगति और शांति का प्रतीक : कुलपति

जासं•हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने तिरंगा यात्रा निकाली। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने हरी झंडी दिखाकर इस यात्रा को रवाना किया। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि रैली को निकालने का मुख्य उद्देश्य लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना और राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूक करना है। तिरंगा हमारे देश की आन-बान-शान का प्रतीक है। इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, कुलसचिव डा. बलवान सिंह मंडल, डा. केडी शर्मा, डा. बीना आदि मौजूद रहे।

कुलपति प्रो., बीआर काम्बोज तिरंगा रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	14.08.2024	---	--

हकृवि में स्वयंसेवकों ने निकाली तिरंगा यात्रा

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने तिरंगा यात्रा निकाली। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने हरी झंड़ी दिखाकर इस यात्रा को रवाना किया।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने तिरंगा रैली में उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि रैली को निकालने का मुख्य उद्देश्य लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना और राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूक करना है। तिरंगा हमारे देश की आन-बान-शान का प्रतीक है जिसके लिए स्वतंत्रता सेनानियों एवं वीर जवानों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। उन्होंने विशेषकर युवाओं से आह्वान किया कि वे तिरंगे के इतिहास को जाने, कि कितनी कुर्बानियों व कठिन प्रयासों के बाद हमें अपना राष्ट्रीय ध्वज लहराने का अवसर मिला है। उन्हे अपने पूर्वजों की कुर्बानियों को याद रखते हुए तिरंगे की गरिमा को बनाए रखना चाहिए।

उन्होंने कहा हमारा राष्ट्रीय ध्वज देश की एकता, प्रगति और शान्ति का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है जो साहस, त्याग और बलिदान का प्रतीक है। बीच में स्थित सफेद पट्टी शांति और सच्चाई का प्रतीक है। हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दर्शाता है। सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है। इसे अशोक चक्र कहते हैं। जो धर्मचक्र का प्रतीक है। इस चक्र में 24 तीलियां हैं। इस चक्र में दी गई हर एक तीली का अपना महत्व है। सभी तीलियाँ सम्मिलित रूप से देश और समाज के चहुंमुखी विकास को दर्शाती हैं।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि ये तिरंगा यात्रा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक खंड-फ्लैचर भवन से आंरभ होकर, ओल्ड कैंपस, विश्वविद्यालय के सभी कॉलेजों, प्रवेश द्वारों व आवासीय क्षेत्रों से होकर निकाली गई। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कुलसचिव डॉ. बलवान सिंह मंडल, स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, सम्पदा अधिकारी एवं मुख्य अभियंता डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, वित्त नियंत्रक नवीन जैन, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा, मुख्य सुरक्षा अधिकारी सुखबीर सिंह आदि उपस्थित रहे। तिरंगा यात्रा में राष्ट्रीय सेवा योजना अवार्डी डॉ. भगत सिंह, एनएसएस अधिकारी डॉ. चन्द्रशेखर डागर, डॉ. विपिन्न, डॉ. मोना वर्मा व डॉ. मोहम्मद इर्दिश शामिल रहे।